B.A-I (Music)

संक्षिप्त परिचय:-

इनायत खाँ

सितार के विकास और प्रचार में स्वर्गीय उ० इनायत खाँ का स्थान अद्वितीय है। सितार-वादन उनके वंश में परंपरा से चली आ रही है। उनके पिता स्व० इमदाद खाँ एक अच्छे सितार-वादक थे और पुत्र विलायत खाँ आधुनिक समय के श्रेष्ठ सितार वादकों में गिने जाते थे। कलकत्ता में सितार और सुरबहार का प्रचार इनायत खाँ ने इतना अधिक जोर दिया था कि घर-घर में सितार और सुरबहार बजाया जाने लगा। उन्होंने अनेक योग्य शिष्य तैयार किये। उल्लेखनीय नाम है- उन्हीं के पुत्र उस्ताद विलायत खाँ, पं० ध्रुव तारा जोशी और श्रीमती रेणुका शाह।

इनायत खाँ पुरानी परंपरा के होते हुये भी रंजकता की वृद्धि के लिए प्रयोगवादी विधियाँ अपनाते रहे। बजाते-बजाते विवादी स्वरों का प्रयोग इतनी सुन्दरता से कर जाते थे कि श्रोतागण मन्त्र मुग्ध हो जाते थे। राग काफी में तीव्र मध्यम, भूपाली में शुद्ध मध्यम और यमन में कोमल ऋषभ आदि स्वर इतनी सुन्दरता से प्रयोग करते थे कि उनके वादन में चार चाँद लग जाते थे। एक बार किसी जिज्ञासु ने उनसे पूछा की जब काफी में

Scanned with CamScanner

तीव्र मध्यम नहीं लगता है तो आप क्यों त्यागते है? उन्होंने उत्तर दिया जिस स्वर के प्रयोग ने मुझे सात सोने के मेडिल दिये हैं तो उसे मैं क्यों न प्रयोग करूँ? इसे सुनकर प्रश्नकर्ता निरुत्तर हो गये।

रवाँ साहब का जन्म 16 जून 1895 ई० को इटावा में हुआ। उनको सितार-शिक्षा अपने पिता स्व० इमदाद खाँ से प्राप्त हुई। कुछ दिनों तक अपने भाई वहीद खाँ के साथ इंदौर दरबार में रहने के बाद कलकत्ता चले गये, जहाँ उनको बड़ा सम्मान मिला। गौरीपुरा रियासत के युवेन्द्र कृष्ण राय चौधरी से उनका सम्पर्क हुआ। उन्होंने इनायत खाँ को गौरीपुर रियासत में नियुक्त कर लिया, जहाँ संगीत के अन्य अनन्यतम साधक थे। नाम:- उ० अमीर खाँ, गायक विनय चन्द्र, इसराज वादक- पं० शीतल प्र० मुखर्जी आदि। सन् 1924 से वे गौरीपुर में स्थाई रूप से रहने लगे। उनकी कई सन्तानें हुई परन्तु एक पुत्र और एक पुत्री जीवित रही। पुत्र विलायत खाँ 14 वर्ष के थे तभी खाँ साहब की मृत्यु हो गई। वे 11 नवम्बर 1938 को परलोक सिधार गये।

Scanned with CamScanner